ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

रायगढ़ रियासत - छत्तीसगढ़ का गौरव

Raigarh State - Pride of Chhattisgarh

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

रणजीत कुमार बारीक
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
के0एम0टी0 शासकीय
कन्या, महाविद्यालय,
रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

छत्तीसगढ़ का रायगढ़ रियासत यहां के महत्तवपूर्ण रियासतों में से एक रहा। यहां के शासक किस प्रकार जमींदार से एक रियासत के मुखिया बने तथा अपने रियासत में इन्होने क्या क्या काम किया इन सब की जानकारी जनसामान्य तक देना और साथ ही अंगेजी शासन के द्वारा इस रियासत को समय समय पर किस प्रकार अपने अधीन करना फिर कुछ दिनों के पश्चात् इन्हे पुनः शक्ति प्रदान करना आदि बातों को पहुचाना मेरे इस विषय का ध्येय रहा।

Raigarh State of Chhattisgarh remained one of the important princely states here. How the rulers here become the head of the princely state from the Zamindar and what work they did in their princely state, given Information about all these to the general public, as well as how to subjugate this princely state from time to time through English rule, then after a few days. After that, it was the goal of my subject to provide them with power again.

मुख्य शब्द: रियासत, शासक, जनसामान्य, शासन, शक्ति, अधीन।

Key words : Princely State, Ruler, Common man, Rule, Power, Subordinate.

प्रस्तावना

सन् 1862 में रिचर्ड टेम्पल द्वारा जमींदारी का पुनः षुरू से सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के आधार पर 1865 में 115 जमींदारियों में से केवल 14 जमींदारियों को रियासत का दर्जा प्रदान किया गया। इन रियासतों के प्रमुखों को रूलिंग चीफ, फयूडेटरी चीफ या राजा कहा गया। इन रियासतों में सबसे बड़ी रियासत बस्तर(13 हजार वर्ग मील) तथा सबसे छोटी रियासत सक्ति(138 वर्ग मील) थी। वहीं रायगढ़ रियासत का स्थान क्षेत्रफल के आधार पर पांचवा स्थान पर था।

रायगढ़ रियासत की नींव आठवीं षताब्दी के प्रारंभ मे पड़ी। इस समय दक्षिण भारत में गोंडों का वर्चस्व था। चांदा इन लोगों का एक प्रमुख केन्द्र था, यहाँ के गोंड़ राजवंष बहुत प्रसिद्ध और पुराने माने जाते थे। मदन सिंह इसी राजवंष के एक व्यक्ति थे। इस परिवार का षासन महाराश्ट्र प्रदेष के चांदा जिले के बैरागढ़ के आसपास था वहां से सपरिवार आकर ये फुलझर राज्य में बस गए, जो कि वर्तमान रायपुर जिले में है। मदनसिंह फुलझर मंे कुछ दिनों तक रूकने के पष्चात "बुनगा" नामक गांव में स्थायी रूप से बसे जो कि वर्तमान रायगढ़ नगर से करीब 16 किमी दूर है।

छत्तीसगढ़ की रियासतों में षासन का आरंभ जमींदारी प्रथा से आरंभ हुआ। तात्कालीन मध्य प्रांत में इस तरह की 115 जमींदारी स्थापित हुईं इसमे से रायगढ़ भी एक थी। चांदा का गोंड राजवंष बहुत प्रसिद्ध और प्राचीन माना जाता था। मदन सिंह इसी राजवंष के एक व्यक्ति थे, उसी जिले के बैरागढ़ नामक स्थान मंे रहते थे। इनके हृदय मंे महत्वाकांक्षा और बाहुओं में जोर था, बैरागढ़ में अपने लिए पर्याप्त क्षेत्र न पाकर ये बाहर निकले, उत्साही तो थे ही, निकट वन और नदी पर्वतों को पार करते फुलझर आए। वहां से रायगढ़ राज्य के "बुनगा" नामक स्थान में और अंत में खास रायगढ़ आकर रायगढ़ राजवंष की नींव रखी।

इस रियासत के संस्थापक मदन सिंह के सम्बन्ध में किसी प्रकार की जानकारी का पूर्णतया अभाव है। जनश्रुतियों के अनुसार रायगढ़ रियासत का संस्थापक उन्हे ही माना गया। तथापि उनके बाद के षासकांे की तिथिवार जानकारी अवष्य प्राप्त होती है। राजा देवनाथ सिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र घनष्याम सिंह को गद्दी पर बैठाने की अनुषंसा जे. जी. बालमेन कमिष्नर डिवीजन रायपुर को प्रेशित अपने पत्र में तात्कालीन मेजर इम्फे डिप्टी कमिष्नर सम्बलपुर ने इस वंष के षासकों के बारे में निम्नानुसार जानकारी प्रेशित की थी। सन 1602 से 1652 तखत सिंह जमींदार की हैसियत से, सन् 1652 से 1712 उसका पुत्र ठाकुर बेन्ट सिंह जमींदार की हैसियत से, सन 1712 से 1772 उसका पुत्र द्विप सिंह जिसे सम्बलपुर के महाराजा अजीत सिंह द्वारा उसके पुत्र उभय सिंह को चांदा में मराठों की कैद से छुड़ाने में मदद करने के कारण राजा बनाया गया था। सन् 1772 से 1882 उसके पुत्र जुझार सिंह जिसे गद्दी पर बैठने के अवसर पर सम्बलपुर के राजा उभयसिंह द्वारा राजा का तिलक प्राप्त हुआ था। उपरोक्त प्रमाण इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि मदन सिंह,तखत सिंह और बेंटसिंह रायगढ़ के जमींदार मात्र थे जबकि द्विप सिंह को 1712 ई. मंे सम्बलपुर के महाराजा द्वारा राजा की उपाधि दी गई थी। द्विप सिंह को राजा की उपाधि दिये जाने के संबंध में एक दूसरे स्थान पर इस प्रकार जानकारी मिलती है।

वास्तव में इस वंश का क्रमिक एवं प्रमाणिक इतिहास पांचवे राजा जुझार सिंह के समय से ही मिलता है। जुझारू व्यक्तित्व का जुझार सिंह संबलपुर के 18 गढ़जात राज्यों की तरह मराठों के आधीन था, किंतु अपने व्यक्तित्व के कारण वह भारी सिद्ध होता रहा। संबलपुर क्षेत्र में इसका अच्छा दबदबा था तथा ईस्ट इंडिया कंपनी से अपनी बात मनवाने की भी इसमें कला थी। सन् 1800 में मराठों द्वारा संबलपुर क्षेत्र का अधिग्रहण किये जाने पर इसने ईस्ट इंडिया कंपनी से सहायक संधि कर ली तथा सन्

1804 में अंग्रेजों को एक याचिका प्रस्तुत कर उन्हे अपना मुख्य संरक्षक स्वीकार कर लिया था। सन् 1806 में अंग्रेजों तथा भोसलों के मध्य हुये समझौते के अनुसार इस क्षेत्र की सभी रियासते भोसलों को वापस कर दी गयी। किंतु रायगढ़ रियासत को अंग्रेजों ने अपने संरक्षण में बनाये रखा। अंग्रेजों के साथ अपने संबंधों को स्थाई बनाने के उद्देश्य से उसने 25 मई 1819 को एक कबुलियत लिख कर ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रति निष्ठा के रूप में 30 स्वर्ण मुद्रायें टकोली (कर) के रूप में देना स्वीकार किया।

जुझार सिंह के बाद उसका पुत्र देवनाथ सिंह रायगढ़ रियासत की गद्दी पर बैठा। देवनाथ सिंह को उसके द्वारा अंग्रेजों के विरूद्ध बैरागढ़ के पड़ोसी शासक अजीत सिंह के विद्रोह को कुचल देने के कारण उसे अपने सार्वभौम स्वामी अंग्रेजों के प्रति की गयी सेवाओं के बदले में अनुदान स्वरूप बरगढ़ का परगना प्राप्त हुआ। रायगढ़ का राज परिवार सदैव ही अंग्रेजो के प्रति निष्ठावान तथा उसका विश्वासपात्र बना रहा। देवनाथ सिंह ने 1857 के विद्रोह के दौरान संबलपुर के सुरेन्द्र साय तथा उदयपुर के शिवराज सिंह जैसे विद्रोहियों तथा उनके अनुयायियों को जिन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह किया था पकड़ने में सहायता पहुंचाकर अंग्रेजों की सेवा की थी।

देवनाथ सिंह के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र घनश्याम सिंह गद्दी पर बैठा। सन् 1867 में उसे अंग्रेजों की ओर से सनद प्राप्त हुई जिसमें उसे "सामंत शासक" (फ्यूडेटरी चीफ) बना दिया गया। पूर्ववर्ती शासक ट्रिब्यूटरी चीफ कहे जाते थे। घनश्याम सिंह को गद्दी पर बैठाये जाने की अनुसंशा मेजर इम्फे, डिप्टी कमिश्नर संबलपुर ने की थी।

घनश्याम सिंह के बाद उसका सुयोग्य पुत्र भूपदेव सिंह 1890 में गद्दी पर बैठा जिसे सन् 1894 में सामंत शासक के पूर्ण अधिकार प्राप्त हुये। राजा भूपदेव सिंह इस रियासत का पहला शासक था जिसने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की थी। योग्य शासक के रूप में उसने योग्यता भी प्रदर्शित की। प्रशासन के समस्त विभागों और सार्वजनिक कार्यो में उसने व्यक्तिगत रूचि ली। प्रशासन तंत्र को सषक्त बनाने के लिये उसने काफी प्रयत्न किये। विभिन्न निर्माण कार्यो का आरंभ इसी षासक के कार्यकाल में हुआ। तथा विकास के अनेक कार्य संपन्न हुये।

भूपदेव सिंह के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र नटवर सिंह सितंबर 1917 में शासक बना। नटवर सिंह का विवाह सक्ति रियासत की राजकुमारी के साथ हुआ था। राजा नटवर सिंह की अस्वस्थता तथा राजकाज चला सकने की असमर्थता के कारण उसके गद्दी पर बैठने के कुछ समय बाद ही उसके शासन अधिकार वापस ले लिये गये। और रियासत के प्रबंध हेतु एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर की प्रशासक के रूप में नियुक्ति की गयी जो पोलिटिकल एजेंट के नियंत्रण में कार्य करता था। लगभग 7 वर्श के बाद नटवर सिंह की निःसंतान मृत्यु हो गयी। नटवर सिंह के बाद उसका छोटा भाई चक्रधर सिंह गद्दी पर बैठा।

इस प्रकार हम देखते है कि रायगढ़ रियासत छ0ग0 के प्रमुख रियासतो में एक था। इस रियासत के अर्न्तगत अनेक महान राजा हुए जो रियासत के विकास के लिए हमेषा ततपर रहे । साथ ही अंगेजो के से इनका संबंध हमेषा अच्छा रहा जिसका फायदा भी इन्हे कलान्तर में उन्हे मिलता रहा। आज उन्ही की देन है कि रायगढ़ जिला छ0ग0 के एक समृद्व जिला के नाम से जाना जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस विशय के अध्ययन का उदेष्य रायगढ़ रियसत में हुए षासको के बारे मे बताना एवं उनके द्वारा रायगढ़ रियासत के प्रजा के लिए किये गये कार्यो से परिचय कराना है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है कि रायगढ़ रियासत छ0ग0 के प्रमुख रियासतो में एक था। इस रियासत के अर्न्तगत अनेक महान राजा हुए जो रियासत के विकास के लिए हमेषा ततपर रहे । साथ ही अंगेजो के से इनका संबंध हमेषा अच्छा रहा जिसका फायदा भी इन्हे कलान्तर में उन्हे मिलता रहा। आज उन्ही की देन है कि रायगढ़ जिला छ0ग0 के एक समृद्व जिला के नाम से जाना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *चार्ल्स ग्रान्ट- दि गजेटियर ऑफ दि सेन्ट्रल प्राविन्सेज ऑफ इंडिया एजुकेशन सोसायटी प्रेस, बंबई 1870,*
2. *इंपीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया सेन्ट्रल प्रोविन्सेज (कलकत्ता 1908)*
3. *रायगढ़ जिला गजेटियर,*
4. *कार्तिकराम, रायगढ़ में कथक*
5. *ई.ए.डीब्रेंट सेन्ट्रल प्राविन्सेज गजेटियर्स, छत्तीसगढ़ स्टेटस 1909*
6. *रायगढ़ समाचार मासिक, रायगढ़ संस्करण मार्च 1939*